॥ श्रीविश्वनाथो जयति ॥

सुगमसाधनचन्द्रिका ।

श्रीस्वामी दयानन्द विरचित ।

श्रीभारतधर्म्म सिण्डिकेट लिमिटेडके शास्त्र प्रकाश
विभाग द्वारा प्रकाशित ।

काशी ।

संवत् १९८४ विक्रमी ।

All Rights Reserved.

सन् १९२७ ई०

[मूल्य =)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भरपूर अर्थलाभ

का

प्रयोजन हो, तो

भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेड

के

शेअर खरीदिये।

—:o:—

नियम मंगानेका पता—

सिण्डिकेट भवन

स्टेशनरोड, बनारस सिटी।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ओं तत्सत् ।

सुगमसाधनचन्द्रिका ।

—:o※o:—

उद्देश्य ।

वर्त्तमान काल इतना कराल है कि जीवोंकी स्वाभाविक रति विषयोंकी ओर होती है। धर्मसाधन, ईश्वर आराधना और नित्य कर्म्मके लिये उनको समय मिलता ही नहीं। इस कारण वर्त्तमान देश काल और पात्रके विचारसे यह सुगम-साधन-चन्द्रिका नामक पुस्तिका प्रकाशित की जाती है। इसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति थोड़े ही समयमें अपने नित्य कर्त्त-व्योंका कुछ न कुछ अनुष्ठान करके आध्यात्मिक उन्नति मार्गमें कुछ न कुछ अग्रसर हो सकेगा। "अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः" इस शास्त्रोय वचनके अनुसार इस पुस्तिकामे शाखाभेद अधिकारभेद आदिका कुछ भी विचार न रखकर एक अति सुगम मार्ग बताया गया है।

धर्मसाधन ।

जिसके द्वारा धर्मलाभ हो, जीव आत्मज्ञानकी ओर क्रमशः अग्रसर हो सके तथा अभ्युदय और निःश्रेयस प्राप्त कर सके उसको धर्म्मसाधन कहते हैं। धर्म्मसाधन द्वारा

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्यमें सत्त्वगुण क्रमशः बढ़ता है। सत्त्वगुण बढ़नेसे जीवको इहलौकिक और पारलौकिक उन्नतिकी प्राप्ति होती है। और धर्म-साधनके ही बलसे साधक पूर्णसत्त्वगुणी बनकर आत्मज्ञान लाभ करता हुआ अन्तमें मुक्तिपद तकको प्राप्त कर लेता है जो मनुष्य-जीवनका अन्तिम लक्ष्य है। धर्म्मसाधनके दो प्रधान अङ्ग हैं, एक ईश्वर उपासना और दूसरा नित्यकर्म। साधन द्वारा क्रमशः ईश्वरके पास पहुंचनेको उपासना कहते हैं। जिन कर्मोंके करनेसे विशेष पुण्य नहीं होता परन्तु न करनेसे पाप होता है और जो कर्म धर्मसाधनमें परम सहायक हैं उनको नित्यकर्म्म कहते हैं।

प्रधान नित्यकर्म।

ब्राह्म मुहूर्त्तमें अर्थात् सूर्योदयके पूर्व निद्रासे उठते ही भगवान्‌की स्तुति करना, मनसे भगवान्‌की पूजा करना, उसके अनन्तर शौचादि क्रियासे निश्चिन्त होकर भक्तिपूर्वक गुरुजनोंको प्रणाम करना। यदि घरमें देवमन्दिर हो तो देवदर्शन और प्रणाम करना। प्रणामके तीन भेद हैं यथाः—उत्तम, मध्यम और अधम प्रणाम, जो विज्ञ व्यक्तियोंसे सीख लेना उचित है। गुरुजन तथा देवस्थान और तीर्थादिके अवलम्बनसे श्रीभगवान् तथा उनकी नित्य विभूति देवता और ऋषि आदिको प्रणाम करनेसे धर्म्मज्ञानकी वृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति होती है। प्रत्येक धर्म्मसाधकका इसका

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

स्मरण रखना उचित है। इस प्रकारसे शास्त्रोक्त नित्यकर्म्म* करनेका साधकको विचार रहना उचित है। ब्राह्मणके लिये ब्रह्मगायत्रीका जप और सन्ध्यावन्दन करना उचित है। द्विज मात्रके लिये त्रिकाल सन्ध्याकी विधि वेद और शास्त्रोंमें है। तान्त्रिक संध्या स्त्री और शूद्र तक कर सकते हैं। गृहीमात्रके लिये पञ्चमहायज्ञोंका साधन करना प्रधान नित्य कर्म्म है। यदि पूर्ण रीतिसे पञ्चमहायज्ञ करना हो तो उसकी पद्धति शास्त्रोंमें मिलती है। परन्तु यदि यथावत् साधन न हो सके तो कमसे कम इस पुस्तिकामें प्रकाशित संक्षेप पञ्चमहायज्ञ पद्धतिके अनुसार तो धर्म्मोन्नतिकी इच्छा रखनेवालेको अवश्य ही साधन करना उचित है क्योंकि पञ्चमहायज्ञके साधन न करनेसे मनुष्य पतित होता है। पञ्चमहायज्ञविहीन साधककी आध्यात्मिक उन्नतिमें रुकावट होती है।

पञ्चमहायज्ञ विज्ञान।

पञ्चमहायज्ञका विज्ञान समझकर उसकी धारणा सदा चित्तमें रखते हुए पञ्चमहायज्ञका साधन करना उचित है। जिस धर्म्मसाधनके द्वारा एक व्यक्तिकी उन्नति हो उसको यज्ञ कहते हैं और जिस धर्म्मसाधनके द्वारा इस जगत् भर अथवा ब्रह्माण्ड भरको लाभ पहुंचे उसको महायज्ञ कहते हैं।

---

* नित्य कर्म्मके भेद नित्यकर्म्म-चन्द्रिका आदि ग्रन्थोंमें देखने योग्य हैं। वैदिक और तान्त्रिक सन्ध्या प्रयोग भी उसी ग्रन्थमें देखने योग्य है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक ब्रह्माण्डके चलानेवाले तथा रक्षक तीन तरहके दैव पदधारी होते हैं। जैसे, एक राज्यके चलानेके लिये अलग अलग महकमोंके अलग अलग पदधारी होते हैं वैसे ही प्रत्येक ब्रह्माण्डके चलानेवाले सूक्ष्म दैवराज्यवाले ये दैव-पदधारी हैं जो श्रीभगवान्‌के अङ्ग हैं। जैसे एक राजाके सेनापति मन्त्री विचारपति आदि अङ्ग समझे जाते हैं, उनके बिना राज्यकी रक्षा नहीं हो सकती है; वैसे ही एक ब्रह्माण्डके लिये ये तीनों श्रेणीके दैवपदधारी श्रीभगवान्‌के अङ्गरूपसे समझने योग्य हैं। उनकी पूजा करनेसे उनकी प्रसन्नता होती है और उनकी प्रसन्नतासे जगत्‌की प्रसन्नता और श्रीभगवान्‌की प्रसन्नता होती है। पञ्चमहायज्ञके द्वारा समस्त विश्व ब्रह्माण्डका सम्वर्द्धन, ऋषि देवता पितर आदिकी प्रसन्नता प्राप्ति और विराट् रूपधारी श्रीभगवान्‌की पूजा होती है।

ब्रह्मयज्ञविज्ञान।

प्रत्येक ब्रह्माण्डका जो आध्यात्मिक विभाग अर्थात् बुद्धि विद्या और ज्ञान सम्बन्धीय विभाग है उसके चलानेवाले और रक्षक ऋषि कहलाते हैं। सब सूक्ष्म लोकोंमें उनका वास है और उनके अवतार मनुष्य लोकमें होते हैं। वे ज्ञानके प्रवर्त्तक हैं इस कारण वेद और वेदसम्मत शास्त्रोंका अर्थ समझकर मननपूर्वक नित्य पाठ करनेसे और साथ ही साथ ऋषियोंकी प्रसन्नताका सङ्कल्प चित्तमें रखनेसे ब्रह्मयज्ञका साधन होता है। ज्ञान द्वारा ऋषियोंकी तुष्टि और पुष्टि होती है इस कारण

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

साधक जब उनको तृप्त करनेके सङ्कल्पसे प्रतिदिन नियमपूर्वक आध्यात्मिक उन्नतिके मार्ग बतानेवाले शास्त्रोंका पाठ और मनन करते हैं तो ऋषिगण प्रसन्न और तृप्त होते हैं और उनके तृप्त होनेसे जगत्में ज्ञानकी अभिवृद्धि अवश्य होती है।

देवयज्ञविज्ञान।

कर्म्मसे ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति स्थिति और लय होता है। पापकर्म्मसे दुःख भोगना पड़ता है और पुण्यकर्म्मसे सुख भोग होता है। कर्म्म जड़ हैं इस कारण उनकी गतिको ठीक रखनेके लिये और कर्मोंके फल देनेके लिये जो दैव पद-धारी हैं उनको देवता कहते हैं। देवतागण भूः भुवः स्वः मह जन तप और सत्य इन सातों ऊद्ध्र्व लोकोंमें वास करते हैं। प्रधान देवता तीन हैं, यथाः—श्रीभगवान् ब्रह्मा, श्रीभगवान् विष्णु और श्रीभगवान् शिव। ये तीनों ब्रह्माण्ड-की सृष्टि स्थिति और लयके विधायक होनेसे साक्षात् ब्रह्मरूप हैं और सर्वशक्तिमान् हैं। मुख्य देवता तैंतीस हैं, यथाः—आठ वसु, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, इन्द्र और यमराज। इन शेष दोनोंके विषयमें शास्त्रोंमें मतभेद भी पाया जाता है। इनके अतिरिक्त देवता अनेक हैं जिनकी संख्या तैंतीस करोड़ कही जाय तो भी थोड़ी है। देवताकी विरोधी जो दैवी-शक्तियां हैं वे असुर कहलाते हैं उनका वास अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल, पाताल, इन सातों अधो-लोकोंमें है। देवता और असुरोंका संग्राम महत्त्व प्राप्तिके

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

लिये हुआ करता है। जब असुर प्रबल हो जाते हैं तब इस मृत्युलोकरूपी मनुष्यलोकमें जो कि भूलोकका एक चौथा हिस्सा है धर्म्मकी अव्यवस्था होने लगती है। देवयज्ञ द्वारा देवताओंका संवर्द्धन, उनकी तुष्टि और पुष्टि हुआ करती है। देवताओंका सम्वर्द्धन होनेसे असुरोंका बल घटता है, कर्मकी शृङ्खला ठीक रहती है, ब्रह्माण्डकी सुरक्षा होती है और सब जगह धर्म्मकी उन्नतिका स्रोत प्रवाहित होता है। अग्निमें आहुति देनेसे साक्षात् रूपसे देवताओं-का संवर्द्धन होता है। विशेष संकल्पसे धर्म्मसाधन करने-से भी देवताओंका संवर्द्धन होता है। नाना यागयज्ञोंका अनुष्ठान, विशेष विशेष धर्म्मसाधन यदि देवताओंके सम्वर्द्धनके संकल्पसे हो तो वे भी देवयज्ञ कहावेंगे।

पितृयज्ञविज्ञान ।

जिस प्रकार ज्ञानके चालक ऋषि और कर्म्मके चालक देवता हैं उसी प्रकार स्थूल जगत्के चालक अग्निष्वात्ता आदि पितृगण हैं। उनके ये सब पद भी नित्य हैं। उनके पद-धारी भी बदला करते हैं। भूलोकके चार हिस्से हैं, यथाः— मृत्युलोक, प्रेतलोक, नरकलोक और पितृलोक। पितृलोक सुखभोगका लोक है उसी लोकमें यमराजकी राजधानी भी है और वहीं नित्य पितृगण वास करते हैं। गर्भमें स्थूल शरीरका बनना, स्थूल शरीरका स्वास्थ्य ठीक रखना, ऋतुओं-का ठीक समयपर होना, वर्षा आदिके द्वारा अन्न आदिका

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ठीक उपजना इत्यादि सब स्थूलकार्यों की सुव्यवस्था करना पितरोंका कार्य्य है। पवित्र कुलोंकी प्रजासन्ततिकी सुरक्षा, आर्य्यजातिरूपी मनुष्यजातिकी बीजरक्षा, वर्णाश्रमकी बीजरक्षा आदि भी पितरोंका कार्य्य है। पितृयज्ञ द्वारा पितरोंकी तुष्टि पुष्टि और संवर्द्धन होता है। पितृयज्ञसे हमारे परलोकगामी नैमित्तिक पितर पिता पितामह माता आदि जो स्थूल शरीर छोड़कर लोकान्तरमें जाते हैं, उनकी भी तृप्ति होती है। पितृयज्ञ द्वारा अपने स्थूल शरीर और कुल आदिकी सुरक्षा तो होती ही है, साथ ही साथ ब्रह्माण्डके स्थूलशरीरकी सुरक्षा होती है। पितृतर्पण आदि भी पितृयज्ञका ही अङ्ग है।

भूतयज्ञविज्ञान ।

देवता अनेक होनेसे और कर्म्मजगत्के चालक होनेसे देवयोनि और मनुष्ययोनि इनके अतिरिक्त चतुर्विध भूतसङ्घकी जो योनियां हैं उनके भी वे चालक और रक्षक हैं। चतुर्विध भूतसङ्घके भेद, यथाः—उद्भिज्ज वृक्षलता आदिके अनेक भेद। स्वेदज अर्थात् खूनके कीड़े, जलके कीड़े, आकाशमें रहनेवाले कीड़े आदिके अनेक भेद। आजकलकी पदार्थविद्या अब स्वेदज जीवोंका पता लगा सकी है और उनको "जर्म" कहती है। अण्डज जीव, यथा,—पक्षी सर्प मछली आदि। और जरायुज जीव, यथा—गऊ, घोड़े, हस्ती, छाग आदि। शास्त्रकारोंने इन चारों प्रकारकी जीव श्रेणियोंकी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

संख्या चौरासी लक्ष कही है। इन चौरासी लक्ष श्रेणियोंके चलाने वाले और रक्षक चौरासी लक्ष अलग अलग देवता हैं। ये सब जीव जड़ राज्यके जीव हैं ये न तो पाप पुण्यके अधि· कारी होते हैं और न स्वयं अपनी इच्छासे कुछ कर सकते हैं। इस कारण इनके लिये अलग अलग देवता दैवराज्यमें नियुक्त रहते हैं। चतुर्विध भूतसङ्घकी कृपा विना मनुष्य जाति एक मुहूर्त भी जीवित नहीं रह सकती है। मनुष्यके जलपान करके तृषा निवृत्त करते समय लाखों स्वेदज जीव आत्मबलि देते हैं। उसी प्रकार मनुष्यकी स्वास्थ्यरक्षाके लिये लाखों स्वेदज जीव प्रतिदिन काम आते हैं। उसी प्रकार उदाहरण समझने योग्य है कि मनुष्यकी प्राणरक्षाके लिये अन्नके द्वारा लाखों उद्भिद जीव अन्नबीजरूपसे आत्मबलि देते हैं। यह तो निरामिष भोजियोंकी बात है, आमिष भोजियोंकी बात तो स्पष्ट ही है। यदि उद्भिद-जातिके जीवोंकी कृपा न हो (क· पासके द्वारा) और यदि अण्डज जीवोंकी आत्मबलि न हो (रेशमी वस्त्रोंके द्वारा) तो मनुष्य अपनी लज्जा निवारण करनेमें असमर्थ हो जायगा। इसी प्रकार जितना स्थिर बुद्धि होकर विचार करेंगे उतना ही चतुर्विध भूतसङ्घका कि· तना ऋण मनुष्यजाति पर है सो समझ सकेंगे। वे जड़जा· तिके जीव हैं इस कारण उनके रक्षक देवताओंका सम्वर्द्धन और पुष्टि तथा तृप्ति होनेसे उनकी भी होती है। जिससे मनुष्य इस भूतऋणसे उत्तीर्ण होता है उसको भूतयज्ञ कहते

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

हैं। भूतोंके रक्षक देवताओंके उद्देश्यसे अन्न जल दान करनेसे भूतयज्ञका साधन होता है। गोग्रास आदि दान भूतयज्ञके अन्तर्गत है। भूतयज्ञके द्वारा चतुर्विध भूतसङ्घकी तुष्टि और पुष्टि होती है और उसके द्वारा इस मृत्युलोकका कल्याणसाधन होता है।

नृयज्ञ विज्ञान।

यद्यपि अधिकार भेदसे वर्णाश्रम माननेवाली आर्य्यजाति और वर्णाश्रम न मानने वाली अनार्य्य जाति, ऐसे मनुष्य जातिके दो भेद हैं, यद्यपि ज्ञानी और अज्ञानी, सभ्य और असभ्य, आचारवान् और कदाचारी इस प्रकारसे मनुष्यजातिके अनेक भेद हैं और यद्यपि हिन्दू ईसाई मुसलमान बौद्ध आदि धर्म्मभेदसे मनुष्यसमाजके अनेक भेद हैं; परन्तु मनुष्यत्वके विचारसे और पञ्चकोषकी पूर्णताके विचारसे मनुष्यमात्र ही भाई भाई है। ज्ञानीके निकट पृथिवीका सम्पूर्ण मनुष्यसमाज एक परिवार है। प्रत्येक मनुष्यके निकट मनुष्य समाज समष्टिसम्बन्धसे ऋणी है। जैसे एक कुटुम्बका प्रत्येक मनुष्य अपने कुटुम्बके प्रत्येक मनुष्यका उपकार करनेको बाध्य है, ऐसे ही मनुष्यसमाजका प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक मनुष्यको उपकार पहुँचानेके लिये बाध्य है। परन्तु प्रत्येक मनुष्य मनुष्यजातिके सब मनुष्योंकी पूजा करने और उनके उपकार पहुँचानेमें असमर्थ है। इस कारण पूज्यपाद त्रिकालदर्शी महर्षियोंने यह नियम नित्यकर्म्ममें रख दिया है कि

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

अपने भोजनसे पहले किसी मनुष्यसमाजका अथवा किसी मनुष्यजातिका अथवा किसी अधिकारका कोई भी मनुष्य अपने घरमें आवे तो अन्न जलादिसे भगवान् समझकर उसकी पूजा करना उचित है। और समय भी आसन जल तथा मिष्ट वचनसे आगन्तुककी पूजा करना परम धर्म्म है। यही सब नृयज्ञके अन्तर्गत है। इस विचार द्वारा अतिथिकी पूजासे भगवान्की पूजा होती है।

काल सेवा और मानसयाग।

उपासना और नित्यकर्म दोनों ही कालका नियम पालन करते हुये और अखण्डित रूपसे प्रति दिन साधकको करना उचित है। यदि किसी कारणसे सुबिधा न मिले तो ठीक समय पर मानसयागरूपसे भी उनका करना उचित है। प्रातःकाल और सायङ्काल ठीक दोनोंकी अर्थात् रात और दिनकी सन्धिमें उपासनाका और सन्ध्यावन्दनका ठीक समय है। अधिक उपासना करने वाले साधकके लिये मध्यान्हकी सन्धि और आधीरातकी सन्धि ये दोनों सन्धियां भी हितकारी मानी गई हैं। जिससे कुछ न होसके उसको कमसे कम प्रातःकालकी सन्धि और सायङ्कालकी सन्धि अर्थात् जिस समय सूर्य्यदेव दिखाई न दें और न तारागण दिखाई दें ऐसी दोनों सन्ध्याओंके समयमें उपासना करना उचित है। यदि सुबीता न हो तो थोड़ी देरतक आंख मीच कर शान्तचित्त हो मनसे ही संक्षेप मानसयाग कर लेना उचित है। रास्ते चलते कहीं

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

एकान्त स्थानमें बैठकर, रेलगाड़ीमें चलते अपने आसनपर आंख मीच कर अथवा जहां जैसी सुबिधा मिले शान्त होकर मानसिक उपासना करना उचित है। कृपालु धर्माचार्य्योंने ऐसी विधि कही है कि कलियुगमें मानस पाप नहीं होता परन्तु मानस पुण्य फल उत्पन्न करता है। इसी वैज्ञानिक नियमके अनुसार मानसयागसे सब कुछ फलकी प्राप्ति हो सकती है। और उपासना विधिके अनुसार तो मानसयाग सबसे उत्तम कहा गया है। इसी प्रकार यदि नित्य कर्मके लिये अवकाश या सुविधा न मिले तो समयको न टालकर सन्ध्या बन्दन और पञ्चमहायज्ञ मानसयाग रूपसे कर लेना चाहिये। सन्ध्या बन्दनका समय तो पूर्वकथित दोनों सन्ध्या है और पञ्चमहायज्ञका समय भोजनसे पहले पूर्वान्हमें माना गया है। इस समयको कदापि टालना उचित नहीं है। काल-की सेवा ठीक ठीक करनेसे चाहे उपासना हो चाहे नित्य कर्म हो दोनोंमें ही बड़ी भारी शक्ति उत्पन्न होती है। अतः सर्वाङ्ग सुन्दर और पूर्ण रूपसे साधन यदि न होसके तौभी कालको त्याग धर्मसाधनमें साधकको कदापि करना उचित नहीं है। और कुछ न हो सके तो कल्पना द्वारा मानसयाग रूपसे भी कर लेना उचित है।

उपासनाविधि।

गुणातीत, सर्वव्यापक, नाम रूपसे परे स्थित श्रीभगवान्-की उपासना करनेमें विना किसी अवलम्बनसे जीव सर्वथा

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

असमर्थ है। जीवका मन विना अवलम्बनके रह नहीं सकता, इस कारण चाहे किसी अधिकारका उपासक हो उपासना करते समय उसको या तो किसी भाव या किसी रूपका अवश्य अवलम्बन करना होगा। इसी कारण दार्शनिकगण कहते हैं कि निर्गुण उपासना असम्भव है और सगुण उपासना ही सम्भव है। योगतत्त्ववेत्ताओंने अवलम्बनके भेदसे उपासनाके अनेक भेद किये हैं। यथाः—ऋषि देवता और पितरोंकी उपासना, रामकृष्ण आदि अवतारोंकी उपासना, शिव गणपति देवी सूर्य और विष्णुरूपी सगुण पञ्चोपासना, ये सब मन्त्रयोगके नियमानुसार उपासनाके अवलम्बन हैं। हठयोगके अनुसार कल्पित ज्योतिर्मय रूप अवलम्बित होता है, लययोगके अनुसार बिन्दुमय रूप अवलम्बित होताहै, जो योगसाधन द्वारा अपने आप प्रकाशित होता है। और राजयोगके द्वारा ज्ञानमय आत्मा ही अवलम्बनीय होते हैं। यह सब ध्यानभेद अपने अपने अधिकारके अनुसार श्रीगुरुदेवसे सीख लेना होता है। उपासनाका मानसयाग स्थूल मूर्त्तिमय अवलम्बनसे ही हुआ करता है। मानसमन्दिरमें सब प्रकारकी कल्पना की जा सकती है। मन द्वारा स्नान करके मन द्वारा उपास्य लोकमें पहुंच कर मन द्वारा वहां उपास्य मूर्त्तिके दर्शन करके तथा प्रणाम करके तथा स्तुति करके नाना उपचारोंसे अपने इष्ट देवकी मानसपूजा साधक हर समय बड़े आनन्द और बड़ी सुगमतासे कर सकता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

यही मानस उपासनाकी संक्षेप विधि है। विस्तारित विधि श्रीगुरुदेवसे सीखने योग्य है। सायंकाल तथा प्रातःकाल और यदि इच्छा हो तो रात्रिको एकान्तमें उपासना करना उचित है। स्थानशुद्धि क्रियाशुद्धि आदि और बहिःपूजाके सब आचारोंके साथ उपासना करना विहित है। भक्तिकी सहायता और योगकी सहायता, दोनों सहायता उपासनामें परमावश्यकीय है। परन्तु यदि कुछ भी न हो सके तो कालका त्याग न करके मानसयागरूपसे गुरूपदिष्ट उपासना करके धर्म्मसाधन मार्गमें उन्नति करना और जीवनको धन्य करना स्त्रीपुरुष मात्रका कर्त्तव्य है।

पञ्चमहायज्ञविधि ।

सङ्कल्प किये विना कर्म्मकी सिद्धि नहीं होती है*। यदि पूर्ण विधिपूर्वक पञ्चमहायज्ञका साधन साधक करना चाहे तो महासङ्कल्प करके साधन आरम्भ करे। विस्तृत पञ्च-महायज्ञ विधि शास्त्रोंमें पाई जाती है। यदि महासङ्कल्प करनेका समय न हो तो मानस सङ्कल्प करके पञ्चमहायज्ञ प्रारम्भ किया जाय। मानस संकल्प इस प्रकारसे किया जाय कि मैं श्रीभगवान्‌की विराट् मूर्त्तिकी पूजारूपसे ऋषियोंके सम्वर्द्धनके लिये ब्रह्मयज्ञ, देवताओंके सम्वर्द्धनके लिये देव-

* यदि महासङ्कल्प मन्त्र देखना हो तो महामण्डल डाइरेक्टरीमें देख लिया जाय।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

यज्ञ, पितरोंके सम्वर्द्धनके लिये पितृयज्ञ, चतुर्विध भूतसङ्घके सम्वर्द्धनके लिये भूतयज्ञ और मनुष्य समाजके सम्वर्द्धनके लिये नृयज्ञ करना प्रारम्भ करता हूं।

ब्रह्मयज्ञके लिये सनातन परिपाटी यह है कि वेदका कुछ संहिताभाग, वेदका कुछ ब्राह्मण भाग, वेदका कुछ उपनिषद् भाग, कुछ शिक्षा, कुछ कल्पसूत्र, कुछ व्याकरण, कुछ निरुक्त, कुछ छन्दःशास्त्र, कुछ ज्योतिःशास्त्र, कुछ न्यायदर्शनसूत्र, कुछ वैशेषिकदर्शनसूत्र, कुछ योगदर्शनसूत्र, कुछ सांख्यदर्शनसूत्र, कुछ कर्म्ममीमांसादर्शन सूत्र, कुछ दैवीमीमांसा दर्शनसूत्र, कुछ वेदान्तदर्शनसूत्र, कुछ स्मृति, कुछ पुराण, कुछ तन्त्रके श्लोक, अपने उपास्य देवका सहस्रनाम इतना नित्य अर्थानुगमनपूर्वक पाठ करनेसे ब्रह्मयज्ञ होता है।

इतना विस्तृत ब्रह्मयज्ञ इस समय सबके द्वारा होना सम्भव नहीं है। सङ्कल्पपूर्वक गीताओंमेंसे कुछ अंश, अथवा कुछ कुछ उपनिषद् और गीताका कुछ अंश, अथवा ऐसे ही आध्यात्मिक उन्नतिकारी शास्त्रीय ग्रन्थोंका कुछ अंश नियमपूर्वक प्रतिदिन अर्थ समझकर पाठ अवश्य करना उचित है। ऐसा होनेसे ब्रह्मयज्ञका साधन हो सकेगा। यदि किसी कारणसे किसी दिन ब्रह्मयज्ञका साधन न हो सके तो दूसरे दिन कुछ अधिक इष्ट मंत्र जप करके प्रायश्चित करना उचित है।

नृयज्ञका विषय पहले कुछ कहा गया है। भोजनसे

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पहले किसी मनुष्य जाति, किसी वर्ण, किसी आश्रम और किसी धर्म्मका मनुष्य घरपर आवे और भोजन करना चाहे तो उसको आगे श्रद्धापूर्वक यथाशक्ति भोजन कराकर तब स्वयं भोजन करना उचित है। जबतक वह भोजन न करे तबतक उसको श्रीभगवान् विराट् पुरुषका एक अङ्ग समझकर भगवान्की ही मूर्त्ति समझे जिससे श्रद्धामें भेद न पड़ने पावे। और समय यदि कोई आवे तो मीठे वचन, यथायोग्य आसन और जल आदिके लिये पूछकर शिष्टाचार करना उचित है। यदि ऐसा मौका न हो तो भोजनका कुछ पदार्थ गौके लिये गोग्रास रूपसे निकालकर तब भोजन करे। यही संक्षेप नृयज्ञकी प्रथा है।

और तीन यज्ञकी विस्तृत पद्धतिके अनुसार यदि ये तीनों यज्ञ कोई करना चाहे अर्थात् विस्तृत रूपसे पञ्चमहायज्ञ करना चाहे तो उसकी स्वतन्त्र पद्धति शास्त्रोंमें पाई जाती है। सदाचारी क्रियाशील, विद्वान् व्यक्तिको पञ्चमहायज्ञका साधन अवश्य ही करना उचित है। पञ्चमहायज्ञसे ऊपर लिखित फल होता है और साथ ही साथ गृहस्थमें जो स्वाभाविक पाप होते हैं वे भी नष्ट हो जाते हैं। और गृहस्थकी श्रीकी वृद्धि अवश्य होती है। वर्त्तमान समयमें यदि किसीसे और कुछ न हो सके तो श्रद्धासे सङ्कल्प करके निम्नलिखित तर्पण करनेसे पञ्चमहायज्ञका फल मिल सकेगा इसमें सन्देह नहीं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

नित्यतर्पणकी संक्षेप विधि।

यदि साधक गंगा स्नान करता हो अथवा और किसी नदी या तालावमें स्नान करता हो तो स्नानके अनन्तर उसी जलमें तर्पण कर सकता है। यदि ऐसा न हो तो घरमें बैठकर पवित्र जलसे तर्पण करे। पञ्चपात्रसे आचमनीय द्वारा जल लेकर दूसरे पात्रमें डाले और तर्पण करे। ※ तर्पणके अनन्तर वह जल किसी पवित्र स्थानमें डाल देवे यथा तुलसी वृक्ष, विल्ववृक्ष आदिके जड़में। तर्पण करनेसे पूर्व मनके द्वारा उस जलमें गंगाजीका आवाहन कर लेवे। जलको स्पर्श पूर्वक गंगा देवीका आवाहन करनेसे जलकी पवित्रता होकर उसमें दैवीशक्तिका सञ्चार हो जाता है। तीन वार इष्टदेव-का नाम मनमें लेकर आचमनकी विधिके अनुसार आचमन करे। ऐसा आचमन तर्पण प्रारम्भ करनेसे पूर्व और समाप्तिके अन्तमें भी करे। तर्पण सब तीन तीन बार करे।

(ऋषितर्पण)

सनकः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

सनातनः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

※ जो विस्तारित पञ्चमहायज्ञ करना चाहें या विस्तारित तर्पण करना चाहें उनको विस्तृत विधि देखने योग्य है। जो उससे भी संक्षेप विधि जानना चाहें उन्हें धर्मकल्पद्रुम सप्तम खण्डोक्त संक्षिप्त पञ्चमहायज्ञविधि देखनी चाहिये। यह तो अकरणान्मन्दकरणं श्रेयःके अनुसार है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सनन्दनः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

सनत्कुमारः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

मरीचिः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

अङ्गिरा तृप्यताम् ॥ ३ ॥

अत्रिः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

पुलस्त्यः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

पुलहः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

क्रतुः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

वसिष्ठः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

वेदव्यासः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

आचार्य्याः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

ऋषयः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

इसके बाद अपने अपने गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि और प्रवर-प्रवर्त्तक ऋषियोंके नाम लेकर तर्पण करना उचित है ।

(देवतर्पण)

ब्रह्मा तृप्यताम् ॥ ३ ॥

विष्णुः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

महेशः तृप्यताम ॥ ३ ॥

प्रजापतिः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

वसवः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

आदित्याः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

रुद्राः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

इन्द्रः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

देव्यः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

देवाः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

अपने अपने कुल देवताका तर्पण करके देव तर्पण समाप्त करना उचित है। परंतु देव तर्पण प्रारम्भ करते समय जिस व्यक्तिको गुरुदीक्षा हो गई है उसको उचित है कि, सबसे प्रथम अपने उपास्य इष्टदेवका तर्पण करके तब देव तर्पण प्रारम्भ करे।

(पितृतर्पण)

यमः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

कव्यवाडनलः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

सोमः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

अर्य्यमाः तृप्यताम् ॥ ४ ॥

अग्निश्वात्ताः पितरः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

सोमपाः पितरः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

बर्हिषदः पितरः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

ये ऊपर लिखित नित्य पदधारी पितर हैं। इनके तर्पण करनेके अनन्तर नैमित्तिक पितर जो इस लोकमें मृत्यु प्राप्त होकर परलोकमें गये हैं उनका तर्पण करना उचित है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

यथा—पिता पितामह प्रपितामह आदि, माता पितामही, प्रपितामही आदि, मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह मातामही मातुल मातृष्वसा आदि। भ्राता, भगिनी, मित्र, आदि जिसका तर्पण करना चाहें इस प्रकारसे सबका नाम और सम्बन्ध उच्चारण करके तृप्यताम् मन्त्रोच्चारण द्वारा नैमित्तिक पितरोंका तर्पण करना उचित है। यदि तर्पण कारी दीक्षित हुआ हो और गुरुदेवका देहान्त हो गया हो तो नैमित्तिक पितृ तर्पण करते समय सबसे पहले गुरुदेवका तर्पण करके पीछे नैमित्तिक पितरोंका तर्पण प्रारम्भ करें।

(भूततर्पण)

कालः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

देशः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

पर्वताः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

सरितः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

सागराः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

उद्भिज्जाः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

वनस्पतयः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

ओषधयः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

स्वेदजाः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

रोगघ्नाः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

अण्डजाः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

नागाः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

सुपर्णाः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

जरायुजाः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

गावः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

पशवः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

भूतग्रामः चतुर्विधः तृप्यताम् ॥ ३ ॥

चतुर्दश भुवनानि तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

यदि तर्पण कर्त्ताके चित्तका चतुर्विध भूतग्रामके किसी विभागके साथ विशेष सम्बन्ध हो तो उस विभागका नाम लेकर भी तर्पण कर सक्ता है ।

(मनुष्य तर्पण)

मनुष्याः तृप्यन्ताम् ॥ ३ ॥

ये के चाऽस्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ॥
येऽबान्धवा बान्धवा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ॥
आब्रह्मस्तम्बपर्य्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्व्वे मातृमातामहादयः ॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनां ।
मया दत्तेन तोयेन तृप्यन्तु भुवनत्रयम् ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार श्लोक बोल कर प्रत्येक श्लोकके बाद एक एक बार जल दिया जाय। यदि कोई साधक मनुष्यलोकके किसी विशेष धर्म्मवीर, दानवीर, युद्धवीर आदिको आत्म-बुद्धिसे जलदान करना चाहें सो भी इसी प्रकार कर सक्ते हैं।

ऊपर लिखित पांचों महायज्ञसम्बन्धीय तर्पण करते समय जो व्यक्ति ओंकारके अधिकारी हैं वे प्रत्येक मन्त्रके आदिमें ओंकार लगा लिया करें और जो व्यक्ति ओंकारके अधिकारी नहीं हैं वे न लगाया करें।

परिशिष्ट।

वर्त्तमान समयके देशकाल पात्रका बिचार करके और अकरणान्मन्दकरणं श्रयः इस शास्त्रीय बचनको स्मरण पूर्वक पञ्च महायज्ञके प्रचारार्थ सब श्रेणीके अधिकारियोंके उपयोगी यह संक्षेप तर्पण पद्धति दी गई है। जो विस्तृतपद्धतिके अनुसार नित्यकर्म न कर सकें अन्ततः उनको इतना तो अवश्य करना उचित है।

इसी प्रकार अन्य धर्मसाधनोंके लिये भी निम्नलिखित परामर्श दिया जाता है।

(क) अपने अपने वेद और शाखाके अनुसार तीनों सन्ध्याओंमें वैदिक संध्या करना द्विजमात्रका कर्त्तव्य है और स्त्री शूद्रको तान्त्रिक सन्ध्या करना उचित है। यदि साधक

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

असमर्थ हो, तो कमसे कम द्विजोंको वैदिकगायत्री और स्त्री-शूद्रोंको अपनी उपासनाके अनुसार तान्त्रिक गायत्रीका जप कमसे कम एक माला और नहीं तो दस बार भी जपना उचित है।

(ख) किसी योग्य गुरुका आश्रय लेकर उपासनाके लिये मन्त्रोपदेश लेना उचित है और उसके अनुसार बहिः-पूजा और मानसपूजा यथाशक्ति करना उचित है कि, जिससे भक्तिकी वृद्धि हो सके।

(ग) मन्त्रयोग, हठयोग, लययोग और राजयोग, इन चारों योगोंमेंसे जिसका जिस योगमें अधिकार हो, चित्त-वृत्तिनिरोधके लिये अपने गुरुदेवसे कुछ साधन सीख लेना उचित है।

(घ) आत्मज्ञान अथवा तत्त्वज्ञान प्राप्तिके लक्ष्यसे प्रति-दिन नियमपूर्वक किसी आध्यात्मिक उन्नतिसम्बन्धीय ग्रन्थका पढ़ना और मनन करना उचित है।

समाप्त ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सनातनधर्मकी पुस्तकें ।

धर्मकल्पद्रुम ।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

यह हिन्दूधर्मका अद्वितीय और परमावश्यक ग्रन्थ है। हिन्दुजातिकी पुनरुन्नतिके लिये जिन जिन आवश्यकीय विषयोंकी जरूरत है, उनमेंसे सबसे बड़ी भारी जरूरत एक ऐसे धर्मग्रन्थकी थी कि, जिसके अध्ययन अध्यापनके द्वारा सनातनधर्मका रहस्य और उसका विस्तृत स्वरूप तथा उसके अङ्ग उपाङ्गोंका यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो सके और साथ ही साथ वेद और सब शास्त्रोंका आशय तथा वेदों और सब शास्त्रोंमें कहे हुए विज्ञानोंका यथाक्रम स्वरूप जिज्ञासुको भलीभांति विदित हो सके। इसी गुरुतर अभावको दूर करनेके लिये भारतके प्रसिद्ध धर्मवक्ता और श्रीभारतधर्ममहामण्डलस्थ उपदेशक महाविद्यालयके दर्शनशास्त्रके अध्यापक श्रीमान् स्वामी दयानन्दजी महाराजने इस ग्रन्थका प्रणयन किया है। इसके सात खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम खण्डका मूल्य २), द्वितीयका १॥), तृतीयका २), चतुर्थका २), पंचमका २), षष्ठका १॥) और सप्तमका २) है। इसके प्रथम दो खण्ड बढ़िया कागज़पर भी छापे गये हैं। और दोनों ही एक बहुत सुन्दर जिल्दमें बांधे गये हैं। मूल्य ५) है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रवीण दृष्टिमें नवीन भारत ।

[श्रीस्वामी दयानन्द सम्पादित]

इस ग्रंथमें आर्यजातिका आदिका वासस्थान, उन्नतिका आदर्श निरूपण, शिक्षादर्श, आर्य जीवन, वर्णधर्म आदि विषय वैज्ञानिक युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणोंके साथ वर्णित हैं। यह ग्रन्थ धर्मशिक्षाके अर्थ बी० ए० क्लासका पाठ्य है। इसके दो खण्ड हैं। प्रत्येकका मूल्य २)

नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत ।

[श्रीस्वामी दयानन्द सम्पादित]

भारतका प्राचीन गौरव और आर्यजातिका महत्त्व जाननेके लिये यह एक ही पुस्तक है। इसका द्वितीय संस्करण परिवर्द्धित और सुन्दर होकर छप चुका है। यह ग्रन्थ भी बी० ए० क्लासका पाठ्य है। मूल्य १)

साधनचन्द्रिका ।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

इसमें मंत्रयोग, हठयोग, लययोग और राजयोग इन चारों योगोंका संक्षेपमें अति सुन्दर वर्णन किया गया है। यह ग्रन्थ प्रथम वार्षिक एफ० ए० क्लासका पाठ्य है। मूल्य १॥)

शास्त्रचन्द्रिका ।

वेद, दर्शन, पुराण, धर्मशास्त्र आदि सभी शास्त्रोंका सारांश इस ग्रन्थमें वर्णित है। मूल्य १॥)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

धर्मचन्द्रिका ।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

एन्ट्रेन्स क्लासके बालकोंके पाठनोपयोगी उत्तम धर्मपुस्तक है। इसमें सनातनधर्मका उदार सार्वभौम स्वरूपवर्णन, यज्ञ, दान, तप आदि धर्माङ्गोंका विस्तृत वर्णन, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, नारीधर्म, आर्यधर्म, राजधर्म तथा प्रजाधर्मके विषयमें बहुत कुछ लिखा गया है। मूल्य १)

आर्य्यगौरव ।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

आर्य्यजातिका महत्त्व जाननेके लिये एक ही पुस्तक है। यह ग्रन्थ स्कूलकी ९वीं तथा १० वीं कक्षाका पाठ्य है। मूल्य ॥)

आचारचन्द्रिका ।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

इसमें प्रातःकालसे लेकर रात्रिमें निद्राके पहले तक क्या क्या सदाचार किस लिये प्रत्येक हिन्दु सन्तानको अवश्य ही पालने चाहिये, इसका रहस्य उत्तम रीतिसे बताया गया है और आधुनिक समयके विचारसे प्रत्येक आचार पालनका वैज्ञानिक कारण भी दिखाया गया है। मूल्य ॥)

नीतिचन्द्रिका ।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

कोमलमति बालकोंके हृदयोंपर नीतितत्त्व खचित करनेके उद्देश्यसे यह पुस्तिका लिखी गई है। इसमें नीतिकी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सब बातें ऐसी सरलतासे समझाई गई हैं कि, इस एकके ही पाठसे नीतिशास्त्रका ज्ञान हो सकता है। मूल्य ॥)

चरित्रचन्द्रिका।

[सम्पादक पं० गोविन्दशास्त्री दुगवेकर]

इस ग्रन्थमें पौराणिक ऐतिहासिक और आधुनिक महापुरुषोंके सुन्दर मनोहर विचित्र चरित्र वर्णित हैं। यह स्कूलकी ६ठीं कक्षाका पाठ्य है। प्रथम भागका मूल्य १) और दूसरे भागका १।)

धर्मप्रश्नोत्तरी

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

सनातनधर्मके प्रायः सब सिद्धान्त अति संक्षिप्तरूपसे इस पुस्तिकामें लिखे गये हैं। प्रश्नोत्तरीकी प्रणाली ऐसी सुन्दर रक्खी गई है कि, छोटे बच्चे भी धर्मतत्त्वोंको भली भांति हृदयङ्गम कर सकेंगे। भाषा भी अति सरल है। मूल्य ।)

परलोक–रहस्य।

[श्रीमान् स्वामी दयानन्द विरचित]

मनुष्य मर कर कहां जाता है, उसकी क्या गति होती है, इस विषयपर वैज्ञानिक युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणोंके साथ विस्तृतरूपसे वर्णन है। मूल्य ।)

चतुर्दशलोक रहस्य।

[श्रीमान् स्वामी दयानन्द विरचित]

स्वर्ग और नरक कहां और क्या वस्तु है, उनके साथ हमारे इस मृत्युलोकका क्या सम्बन्ध है इत्यादि विषय शास्त्र

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

और युक्तिके साथ वर्णित किये गये हैं। आजकल स्वर्ग नरक आदि लोकोंके विषयमें बहुत संशय फैल रहा है। श्रीमान् स्वामीजी महाराजने अपनी स्वाभाविक सरल युक्तियोंके द्वारा चतुर्दश लोकोंका रहस्य वर्णन करते हुए उस सन्देहका अच्छा समाधान किया है। मूल्य ।)

सती-चरित्र-चन्द्रिका।

[श्रीमान् पं० गोविन्दशास्त्री दुगवेकर सम्पादित]

इस पुस्तकमें सीता, सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी आदि ४३ सती स्त्रियोंके जीवनचरित्र लिखे गये हैं। मूल्य २)

नित्य-कर्म-चन्द्रिका।

इस ग्रन्थमें प्रातःकालसे लेकर रात्रिपर्यन्त हिन्दुमात्रके अनुष्ठान करने योग्य नित्य कर्म्म वैदिक तांत्रिक मन्त्रोंके साथ भली भांति वर्णित किये गये हैं। मूल्य ।)

धर्मसोपान।

यह धर्मशिक्षा विषयक बड़ा उत्तम पुस्तक है। मू० ।)

धर्म-कर्म-दीपिका।

इस पुस्तकमें कर्मका स्वरूप, कर्मके भेद, संस्कारके लक्षण और भेद, वैदिक संस्कारोंका रहस्य, त्रिविध कर्मका वैज्ञानिक स्वरूप, कर्मसम्बन्धसे मुक्ति, कर्मके साथ धर्मका मिश्र सम्बन्ध, धर्मरूप कल्पद्रुमका विस्तृत वर्णन, वर्णाश्रमधर्मकी महिमा और विज्ञान, उपासना रहस्य, उपासनाकी मूलभित्तिरूप पीठरहस्य, धर्म कर्म और यज्ञ शब्दोंका वैज्ञानिक रहस्य और सदाचार विज्ञान और महत्त्व प्रतिपादन किया गया है, यह ग्रन्थ मूल और सुस्पष्ट हिन्दी-अनुवाद सहित

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

शास्त्रीय प्रमाण देकर छापा गया है. यह ग्रन्थरत्न प्रत्येक सनातनधर्मावलम्बीके लिये उपादेय है। मूल्य ॥)

सदाचारसोपान।

यह पुस्तक कोमलमति बालक बालिकाओंकी धर्मशिक्षाके लिये प्रथम पुस्तक है। मूल्य ८) एक आना।

कन्याशिक्षासोपान।

कोमलमति कन्याओंको धर्मशिक्षा देनेके लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ८)

ब्रह्मचर्यसोपान।

ब्रह्मचर्यव्रतकी शिक्षाके लिये यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है। सब ब्रह्मचारी आश्रम, पाठशाला और स्कूलोंमें इस ग्रन्थकी पढ़ाई होनी चाहिये। मूल्य ।) आना।

राजशिक्षासोपान।

राजा महाराजा और उनके कुमारोंको धार्मिकशिक्षा देनेके लिये यह ग्रन्थ बनाया गया है. परन्तु सर्वसाधारणकी धर्म्मशिक्षाके लिये भी यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है, इसमें सनातनधर्मके अङ्ग और उसके तत्त्व अच्छी तरह बताये गये हैं। मूल्य ≡) तीन आना।

साधनसोपान।

यह पुस्तक उपासना और साधनशैलीकी शिक्षा प्राप्त करनेमें बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ।) चार आना।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

शास्त्रसोपान ।

सनातनधर्मके शास्त्रोंका संक्षेप सारांश इस ग्रन्थमें वर्णित है। सब शास्त्रोंका कुछ विवरण समझनेके लिये प्रत्येक सनातनधर्मावलम्बीके लिये यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ।) चार आना।

उपदेशपारिजात।

यह संस्कृत-गद्यात्मक अपूर्व ग्रन्थ है। सनातनधर्म क्या है. धर्मोपदेश किसको कहते हैं, सनातनधर्मके सब शास्त्रोंमें क्या क्या विषय हैं, धर्मवक्ता होनेके लिये किन किन योग्यताओंके होनेकी आवश्यकता है इत्यादि अनेक विषय इस ग्रन्थमें हैं। मूल्य ॥) आना।

कल्किपुराण।

कल्किपुराणका नाम किसने नहीं सुना है? इस कलियुगमें कल्कि महाराज अवतार धारणकर दुष्टोंका संहार करेंगे, उसका पूर्ण वृत्तान्त है। वर्तमान समयके लिये यह बहुत हितकारी ग्रन्थ है। विशुद्ध हिन्दी अनुवाद और विस्तृत भूमिका सहित यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। मू० १॥)

योगदर्शन।

हिन्दी भाष्यसहित। इस प्रकारका हिन्दी भाष्य और कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। सब दर्शनोंमें योगदर्शन सर्ववादिसम्मत दर्शन है और इसमें साधनके द्वारा अन्तर्जगत्के सब विषयोंका प्रत्यक्ष अनुभव करा देनेकी प्रणाली है। प्रत्येक सूत्रका भाष्य प्रत्येक सूत्रके आदिमें भूमिका देकर ऐसा क्रमबद्ध बना दिया गया है कि, जिससे पाठकोंको मनोनिवेश-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वक पढ़नेपर असम्बद्ध नहीं मालूम होगा और ऐसा प्रतीत होगा कि, महर्षि सूत्रकारने जीवोंके क्रमाभ्युदय और निःश्रेयसके लिये मानों एक महान् राजपथ निर्माण कर दिया है। मूल्य २) दो रुपया।

मन्त्रयोगसंहिता।

भाषानुवादसहित। इसमें मंत्रयोगके १६ अंग और क्रमशः उनके लक्षण, साधनप्रणाली आदि सब अच्छी तरहसे वर्णन किये गये हैं। इसमें मंत्रोंका स्वरूप और उपास्य-निर्णय बहुत अच्छा किया गया है और अनर्थकारी साम्प्रदायिक विरोधके दूर करनेके लिये यह एकमात्र ग्रन्थ है, इसमें नास्तिकोंके मूर्त्ति पूजा, मन्त्रसिद्धि आदि विषयोंमें जो प्रश्न होते हैं, उनका अच्छा समाधान है। मू० १)

हठयोगसंहिता।

भाषानुवादसहित। योगविषयक ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आजतक प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें हठयोगके ७ अंग और क्रमशः उनके लक्षण साधनप्रणाली आदि सब अच्छी तरहसे वर्णन किये गये हैं। गुरु और शिष्य दोनों ही इससे पूरा लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ।॥)

स्तोत्र कुसुमाञ्जलि।

इसमें पंचदेवता, अवतार और ब्रह्माकी स्तुतियोंके साथ साथ आजकलकी आवश्यकतानुसार धर्मस्तुति, गंगादि पवित्र तीर्थोंकी स्तुति, वेदान्त प्रतिपादक स्तुतियां और काशीके प्रधान देवता श्रीविश्वनाथादिकी स्तुतियां हैं। मूल्य ।) आना।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सप्त गीताएं ।

विष्णुगीताका मूल्य १), सूर्य्यगीताका मूल्य ॥), शक्तिगीताका मूल्य १), धीशगीताका मूल्य ॥।) शंभुगीताका मूल्य १) संन्यासगीताका मूल्य १) और गुरुगीताका मूल्य ।) है। इनमेंसे पञ्चोपासनाकी पांच गीताओंमें एक एक तीनरंगा विष्णुदेव, सूर्य्यदेव, भगवती और गणपति देव तथा शिवका चित्र भी दिया गया है। शम्भुगीतामें वर्णाश्रमबन्ध नामक चित्र भी देखने योग्य है। मूल संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित है।

कर्म्ममीमांसा दर्शन ।

महर्षि भरद्वाजकृत यह दर्शनशास्त्र अनुसन्धान द्वारा प्राप्त हुआ है, सूत्र, सूत्रका हिन्दीमें अर्थ और संस्कृत भाष्यका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार इसको छापा गया है। कर्मके साथ धर्मका सम्बन्ध, धर्मके अङ्गोपाङ्ग, पुरुषधर्म, नारीधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म, आपद्धर्म, प्रायश्चित प्रकरण आदि अनेक विषयोंका विज्ञान धर्मपादमें वर्णित हुआ है। संस्कारशुद्धिसे क्रियाशुद्धि कैसे होती है तथा उसके द्वारा मोक्षप्राप्ति किस प्रकार हो सकती है इत्यादि विषयोंका विज्ञान संस्कारपाद, क्रियापाद और मोक्षपादमें वर्णित हुआ है। इसका प्रथम और द्वितीय पाद प्रकाशित हो गया है। क्रमशः मूल्य १॥) २)

गोस्वामी तुलसीदासजीकी रामायण ।

श्रीगोस्वामीजीके हस्तलिखित पुस्तकके साथ मिलाकर सम्पूर्ण विशुद्धरूपसे छापा गया है। इसमें कठिन कठिन शब्दोंका अर्थ इस तरहसे दिया गया है कि बिना किसीके

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सहारासे औरत, बालक, बुड्ढे आदि सभी कोई अच्छी तरह कठित कठिन भावोंको समझ ले सकते हैं। मू० १॥) है।

गीतार्थचन्द्रिका।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित।]

इसमें श्लोकके प्रत्येक शब्दका हिन्दी अनुवाद, समस्त श्लोकका सरल अर्थ और अन्तमें एक अति मधुर चन्द्रिका द्वारा श्लोकका गूढ़ तात्पर्य बतलाया गया है। इसमें किसीका आश्रय न लेकर ज्ञान, कर्म और उपासना तीनोंका सामञ्जस्य किया गया है। मूल्य २॥)

सनातनधर्म–दीपिका।

[श्रीस्वामी दयानन्द विरचित]

इसमें धर्म, नित्यकर्म, उपासना, अवतार, श्राद्धतर्पण, यज्ञोपवीत, संस्कार, वेद और पुराण, वर्णधर्म, नारीधर्म शिक्षादर्श और उपसंहार शीर्षक निबंध लिखकर श्रीस्वामी-जीने बड़ी ही सरल भाषामें सनातनधर्मके मौलिक सिद्धान्त समझा दिये हैं। मूल्य ।॥)

त्रिवेदीय सन्ध्या।

[पं० राधिकाप्रसाद वेदान्तशास्त्री प्रणीत]

इसमें तीनों वेदकी सन्ध्या दी गई है। हर एक मंत्रका हिन्दीमें अन्वय और विशुद्ध सरल हिन्दी भाषामें अनुवाद किया गया है। सन्ध्या क्यों की जाती है? सन्ध्या किस समय और कैसे की जाती है, सन्ध्या न करनेसे क्या क्या हानि होती है, सन्ध्याका वैज्ञानिक तात्पर्य क्या है, गायत्रीका रहस्य क्या है, इस प्रकारसे सन्ध्यासम्बन्धीय सब बातें युक्ति और शास्त्रीय प्रमाणोंसे सिद्ध की गई है। मू० केवल ।=)

निगमागम बुकडिपो, सिण्डिकेट भवन, बनारस सिटी।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

धर्म, राजनीति, तत्त्वज्ञान आदि विषयोंका मनो-रंजनके साथ ऊहापोह कर भारतीय जनताको सज्ञान, जाग्रत और आत्मनिर्भर बनानेवाला साप्ताहिक—

भारतधर्म

केवल ३) वार्षिक देनेसे अपने प्रेमीकी एक वर्ष पूरी सेवा करता है। आज ही एक कार्ड लिखकर नमूना मुफ्तमें मंगाइये।

—— ——

इसी उद्देश्य और ढंगकी अंग्रेजी मासिक पत्रिका—

महाशक्ति

का वार्षिक मूल्य भी केवल ३) है। ग्राहक बनिये।

पता—

मैनेजर, संवादपत्र विभाग, सिण्डिकेट भवन,
बनारस सिटी।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

श्रीस्वामी दयानन्द महाराज प्रणीत

धर्मकल्पद्रुम

आठ खण्डोंमें

(यह हिन्दुधर्मका विश्वकोष है)

श्रीगोविन्द शास्त्री दुगवेकर प्रणीत

चरित्र-चन्द्रिका दो भागोंमें और सती-चरित्र-चन्द्रिका एक भाग।

(इनमें वैदिक कालसे वर्तमान कालतकके प्रधान प्रधान स्त्री-पुरुषोंके मनोहर चरित्र हैं)

श्रीगोपालचन्द्र चक्रवर्ती वेदान्तशास्त्री प्रणीत

सरल बंगला शिक्षा।

(हिन्दीके द्वारा बंगला सीखनेकी उत्तम पुस्तक है।)

हमारे यहां मिलती है। और भी सब तरहकी पुस्तकें विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं। बड़ा सूचीपत्र मंगाइये।

मैनेजर--

निगमागम बुकडिपो, बनारस सिटी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri